Sixteenth Loksabha

an>

Title: Regarding increasing cases of child birth through surgery.

श्री महेश गिरी (पूर्वी दिल्ली): महोदया, आपने मुझे अवसर दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। मैं सबसे पहले प्रधान मंत्री जी का धन्यवाद करना चाहूंगा। उन्होंने दिशा कमेटी बनाई, जिसकी वजह से हमें राज्यों की स्थिति का अवलोकन करने का मौका मिलता है। कई ऐसी गम्भीर बातें उस मीटिंग में मेरे सामने आईं। मैंने एक सर्वे के लिए आग्रह किया। उसमें यह गम्भीर बात सामने आई।

मैडम, परिवारों में जो भी मां-बहन, मातायें गर्भवती होती हैं, उसके बाद नेचुरल तौर पर उनकी डिलेवरी होती है। धीरे-धीरे प्राइवेट अस्पतालों में सर्जरी बढ़ती जा रही है। मैं सरकारी अस्पतालों का आंकड़ा देख रहा था, तो उसके बाद मैंने प्राइवेट अस्पतालों के भी आंकड़े मंगवाने शुरू किए। यह बहुत गम्भीर बात है कि सरकारी अस्पतालों के आंकड़े 10 से 12 प्रतिशत के आसपास हैं। प्राइवेट अस्पतालों के 10-12 प्रतिशत ज्यादा होने चाहिए, पर आज यह गम्भीर रूप से 32, 34, 35 प्रतिशत तक आगे बढ़ चुके हैं और ये धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे हैं। मैं मानता हूं कि सर्जरी के द्वारा स्वाभाविक है कि महिला, माता, बहन को यदि कोई कठिनाई हो, तो एक जीवनदान भी उससे मिलता है। यह जीवनदायिनी तकनीकी है। आजकल एक फैशन हो गया है कि आर्थिक रूप से समृद्ध परिवार हो या बड़े-बड़े अस्पताल हों, अगर प्राकृतिक रूप से डिलेवरी हो भी रही हो तो भी, परिवारों को इतना पता नहीं होता है, पर उन्हें सर्जरी के लिए बता दिया जाता है और उनकी सर्जरी होती है। वहीं अगर गांवों की बात करें, तो गांवों का रेश्यो बहुत कम है। उसके मुकाबले शहरों में बहुत ज्यादा रेश्यो है, जहां बड़े-बड़े अस्पताल हैं। एनएफएचएस-4 के अनुसार प्राइवेट अस्पतालों में यह संख्या 35 प्रतिशत तक सरकारी अस्पतालों के हिसाब से आगे बढ़ गई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार एक देश के अंदर 10 से 15 प्रसव के मामले सर्जरी द्वारा होना ठीक है। भारत में वर्ष 2010 तक यह 8.5 प्रतिशत था, लेकिन पिछले दशक में यह बहुत ज्यादा बढ़ा है। कई राज्य ऐसे हैं, जहां यह 40 से 45 प्रतिशत तक बढ़ा है।

अंत में, मैं कहना चाहूंगा कि सर्जरी द्वारा प्रसव के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव भी होते हैं। ऐसे में यह आवश्यक है कि इस विषय पर सरकार गम्भीरता से ध्यान दे, क्योंकि कई गरीब परिवार भी इसके शिकार होते हैं।

HON. SPEAKER:

Shri Sharad Tripathi,

Kunwar Pushpendra Singh Chandel,

Dr. Manoj Rajoria,

Shri Harish Meena, and

Shri Bhairon Prasad Mishra are allowed to associate with the matter raised by Shri Maheish Girri.